राजस्थान पत्रिका
भरतपुर . शनिवार
04.02.2012

सरसों विज्ञान मेला › वरिष्ठ वैज्ञानिकों ने दी सलाह

किसान बनाएं अपनी कंपनी

भरतपुर

alwar@patrika.com

खाद्य तेलों की पूर्ति के लिए सरसों की उत्पादकता बढ़ानी होगी। खेती की लागत कम हो तथा मूल्य भाव सही रहे तभी देश का किसान अपनी आजीविका चला सकता है। इसके लिए किसान अपनी कंपनियां बनाकर स्वयं कृषि उत्पादों का विपणन करें। यह बात शुक्रवार को सरसों अनुसंधान निदेशालय के 18वें सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष डॉ. आरबी सिंह ने कही।

उन्होंने कहा आज एक गैर किसान की आमदनी सौ रूपए है तो उसकी तुलना में एक किसान की आमदनी बीस रूपए है। आमदनी की इस विषमता को खत्म करना होगा। उन्होंने कहा हरित क्रांति से देश को फायदा हुआ, लेकिन अभी खेती में फसल पद्धति में बहुत बदलाव की आवश्यकता है। उन्होंने कहा नवयुवकों के लिए देश में बहुत योजनाएं हैं, उनका उपयोग करना चाहिए। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक निदेशक डॉ. बीबी सिंह ने कहा कि विपरीत परिस्थितियों में भी हमारा सरसों का उत्पादन स्थिर है। उन्होंने कहा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद किसानों के हितों के लिए हमेशा तैयार है।

दिए प्रमाण पत्र

इस अवस पर उत्कृष्ट कृषि सहभागिता एवं उन्नत तकनीकों को अपनाकर तथा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से सरसों उत्पादन में अग्रणी योगदान देने के लिए 40 किसानों को प्रमाण पत्र एवं प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया गया।

लगाई प्रदर्शनी

कृषि विज्ञान केन्द्र कुम्हेर, कृषि विभाग, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मथुरा, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान दिल्ली, स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, आईडीबीआई बैंक, राम फर्टिलाइजर एण्ड कैमीकल्स, जसोरिया बीज भंडार, महाराष्ट्र हाईब्रिड सीड्स कंपनी, चम्बल फर्टिलाइजर एण्ड कैमीकल्स, शिवम सीड्स कंपनी, लुपिन रिसर्च फाउण्डेशन आदि संस्थाओं की ओर से स्टॉल लगाकर किसानों को जानकारी दी गई।

किया विमोचन

अतिथियों ने किसान सहभागिता द्वारा सरसों की उन्नत प्रजातियों का चयन एवं बीज उत्पादन अवधारणा एवं अनुभव तथा सरसों आधारित फसल चक्रों के लिए संसाधन संरक्षण तकनीकों का विमोचन किया गया।

विमोचन समारोह में फोल्डर का विमोचन करते अतिथि।

किसान आयोग का हो गठन

सरसों अनुसंधान सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ. डी.पी सिंह ने कहा कि हर प्रदेश में किसान आयोग का गठन होना चाहिए। किसानों को फसल का लाभकारी मूल्य तथा एक ही दर से बैंक ऋण मिलना चाहिए। सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ. जितेन्द्र सिंह चौहान ने कहा कि निदेशालय भरतपुर की स्थापना का मिशन राई-सरसों की उत्पादकता बढ़ाना, तेल की गुणवत्ता और कसानों की आजीविका में सुधार करना है। निदेशालय ने किसानों के लिए कृषि फसलों में बीज उत्पादन विषय पर प्रतिवर्ष किसान प्रशिक्षण आयोजित किया है। केन्द्र कुम्हेर के प्रभारी डॉ. अमरसिंह एवं संयुक्त निदेशक (तिलहन) कृषि विभाग देशराज सिंह ने किसानों से उन्नत तकनीकों को अपनाने की अपील की। डॉ. वाईपी सिंह ने आभार व्यक्त किया। संचालन केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. एसके झा ने किया।

राजस्थान पत्रिका ५ फरवरी २०१२

5 फरवरी 2012

राजस्थान जागरण

किसान उत्पादों का करें विपणन

भरतपुर: कृषि अनुसंधान केन्द्र में किसान मेले का आयोजन हुआ जिसका शुभारंभ राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष डा. आर बी सिंह ने किया। मेले में सरसों उत्पादन बढ़ाने की नवीन तकनीक एवं अनुसंधानों के संबंध में विस्तार से जानकारी दी गयी और सरसों पौधा प्रतियोगिता के किसानों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

किसान मेले के शुभारंभ के अवसर पर राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष डा. आर बी सिंह ने कहा कि किसानों को खाद्य तेलों के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिये सरसों की उत्पादकता बढ़ानी होगी और उत्पादन लागत को कम कर नवीन तकनीक व उन्नत बीजों का प्रयोग करना होगा।

डा. सिंह ने कहा कि बाजार मूल्य को नियंत्रण करने के लिये किसानों को कंपनियां बनाकर कृषि उत्पादों का विपणन करना होगा। उन्होंने गांवों को सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। समारोह में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डा. बी बी सिंह ने कहा कि सरसों की फसल पर किये जा रहे अनसुंधान सही दिशा में चल रहे हैं किंतु विपरीत परिस्थितियों में इस फसल के उत्पादन के संबंध में भी अनुसंधान करने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि सरसों की उत्पादकता आगामी 10 वर्षों में 20 क्विंटल प्रति हैक्टेयर करनी होगी जिसके लिये कम अवधि व अधिक तापमान की सहनशील किस्मों का विकास करना होगा। समारोह में सरसों अनुसंधान सलाहकार समिति एवं हरियाणा किसान आयोग के अध्यक्ष डा. डी पी सिंह ने कहा कि प्रत्येक राज्य में किसान आयोग का गठन किया जाना चाहिये क्योंकि हर प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियां अलग - अलग हैं। उन्होंने किसानों से संसाधन तकनीक अपनाने पर जोर दिया।

समारोह में सरसों अनुसंधान केन्द्र के निदेशक डा. जीतेन्द्र सिंह ने सरसों के क्षेत्र में किये जा रहे अनुसंधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला और बताया कि अनुसंधान केन्द्र राई व सरसों की खेती में अधिक उत्पादन बढ़ाने के लिये निरंतर अनुसंधान कर रहा है। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केन्द्र कुम्हेर के प्रभारी डा. अमर सिंह एवं संयुक्त निदेशक देशराज सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये। समारोह में किसान सहभागिता द्वारा बीज उत्पादन पर जारी किये गये दो तकनीकी प्रसार पत्रकों का अतिथियों द्वारा विमोचन किया गया। इस अवसर पर सरसों पौधा प्रतियोगिता के 40 किसानों को प्रमाण पत्र व प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। सरसों मेले में कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विभाग, केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, केन्द्रीय मृदा व जल संरक्षण अनुसंधान, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान एवं अन्य संस्थानों की स्टालें भी लगायी गयी जिनमें कृषि विज्ञान केन्द्र कुम्हेर प्रथम, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वितीय एवं कृषि विभाग की स्टाल तृतीय रही जिन्हें पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।

कृषि अनुसंधान केन्द्र में आयोजित किसान मेले में तकनीकी प्रसार पत्रकों का विमोचन करते अतिथि। जागरण

सराहनीय

- सरसों अनुसंधान केन्द्र में आयोजित हुआ किसान मेला

सरसों उत्पादक राज्य घोषित करने की मांग

भरतपुर: भरतपुर चैम्बर आफ कामर्स एण्ड इन्डस्ट्रीज ने राज्य के मुख्यमंत्री व वित्त मंत्री को बजट प्रस्तावों में शामिल करने के लिये भेजे गये सुझावों में राजस्थान को सरसों उत्पादक राज्य घोषित कराने की मांग की है चैम्बर के अध्यक्ष जय कुमार गोयल एवं महामंत्री अश्वनी कुमार कोहली द्वारा मुख्यमंत्री व वित्त मंत्री अशोक गहलोत को भेजे गये प्रस्तावों में कहा है कि राजस्थान में करीब 35 लाख हैक्टेयर भूमि पर सरसों का उत्पादन होता है ।

फसल पद्धति के बदलाव की जरूरत

सरसों अनुसंधान निदेशालय में लगा सरसों विज्ञान मेला

अमर उजाला ब्यूरो

भरतपुर। सरसों अनुसंधान निदेशालय परिसर में आयोजित 18वें सरसों विज्ञान मेले का उद्घाटन शुक्रवार को राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष डा. आरबी सिंह ने किया।

समारोह में बोलते हुए डा. सिंह ने किसानों से कहा कि देश की खाद्य तेलों की पूर्ति के लिए उन्हें सरसों की उत्पादकता बढ़ानी होगी। खेती की लागत को कम कर मूल्य भाव को भी कम सही रखना होगा तभी किसान खेती पर निर्भर रहकर अपनी जीविका चला सकता है। उन्होंने कहा कि आज एक गैर किसान की आय 100 रुपये है तो उसकी तुलना में किसान की आमदनी मात्र 20 रुपये है, आय की इस विषमता को समाप्त करना होगा तभी किसान और खेती बचेगी और किसान समृद्ध होगा। उन्होंने किसानों को सलाह दी कि वे नित नए हो रहे अनुसंधानों को देखें और उन्नत तकनीकों को अपना कर अपनी खेती के उत्पादन को बढ़ावा दें। उन्होंने कहा कि हरित क्रांति से देश को काफी लाभ तो हुआ लेकिन अभी खेती में फसल पद्धति के बदलाव की जरूरत है। उन्होंने ग्रामीण युवा वर्ग से गांव में ही रहकर अपने कर्तव्य को अंजाम देने की सलाह दी। समारोह के दौरान संसाधन संरक्षण तकनीक पर जारी फोल्डर का विमोचन मुख्य अतिथियों द्वारा किया गया। मौके पर विशिष्ठ अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक डा. बीबी सिंह, हरियाणा किसान आयोग के अध्यक्ष डा. डीपी सिंह ने भी विचार व्यक्त किए।

निदेशालय के निदेशक डा. जीतेंद्र सिंह चौहान ने मुख्य अतिथियों का स्वागत करने के साथ ही निदेशालय की गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा सरसों अनुसंधान के क्षेत्र में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र कुम्हेर के प्रभारी डा. अमर सिंह, कृषि विभाग के संयुक्त निदेशक देशराज सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन डा. अशोक कुमार शर्मा और डा. एस के झा ने किया। मेले में विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई।

भरतपुर के सरसों अनुसंधान निदेशालय में लगे कृषि विज्ञान मेले के अवसर पर संसाधन संरक्षण तकनीक पर जारी फोल्डर का विमोचन करते मुख्य अतिथि।

किसानों ने उन्नत बीज की जानकारी ली

अमर उजाला ब्यूरो

सरसों विज्ञान मेले में लगी प्रदर्शनी

भरतपुर। राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय में शुक्रवार को आयोजित सरसों विज्ञान मेला के अवसर पर विभिन्न विभागों द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई। यहां शाम तक किसानों की भीड़ आती रही।

मेले में जहां निदेशालय के तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग की ओर से सरसों की खेती के लिए उन्नत किस्म की प्रदर्शनी लगाई गई। वहीं कृषि विज्ञान केंद्र कु म्हेर की भी नवीनतम अनुसंधानों को लेकर प्रदर्शनी लगी। केंद्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान मकधूम मथुरा, केंद्रीय मृदा एवं जल संरक्षण अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान छलेसर आगरा, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, आईडीबीआई बैंक, श्रीराम फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स, जसोरिया बीज भंडार, विवाह शीड्स लिमिटेड हैदराबाद द्वारा भी प्रदर्शनी लगाई गई। मेला में हाईब्रिड्स सीड्स कंपनी महाराष्ट्र, चंबल फर्टिलाइजर्स एंड केमिकल्स हैदराबाद, पीएचआई सीड्स जयपुर, लुपिन, शिवम शीड्स कंपनी भरतपुर द्वारा प्रदर्शनी लगाई गई। जिसे लगभग 800 किसानों ने देखा।

मेले में कृषि विज्ञान केंद्र कुम्हेर, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली तथा कृषि विभाग की प्रदर्शनी प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहीं।

अमर उजाला 4 फरवरी 2012

खेती को बचाना है तो किसान को बचाएं

भास्कर न्यूज | भरतपुर

देश की खाद्य तेलों की पूर्ति करने के लिए सरसों की उत्पादकता बढ़ाएं, खेती की लागत को कम करें और मूल्य भाव को सही रखें तभी देश का किसान खेती पर निर्भर रहकर अपनी जीविका चला सकता है। आज एक गैर किसान व किसान की आमदनी की विषमता को खत्म करना होगा तभी हमारे देश की खेती बचेगी और किसान समृद्ध होगा। इसके लिए किसान अपनी कंपनियां बनाकर स्वयं कृषि उत्पादों का विपणन करें।

यह बात सरसों अनुसंधान निदेशालय के 18वें सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि व राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के पूर्व अध्यक्ष डॉ. आरबी सिंह ने किसानों को संबोधित करते हुए कहीं।उन्होंने कहा कि हरित क्रांति से देश को बहुत फायदा हुआ लेकिन अभी फसल पद्धति में बहुत बदलाव की आवश्यकता है। उन्होंने नवयुवकों से गांव नहीं छोड़ने की अपील की। उन्होंने कहा कि देश में बहुत योजनाएं हैं उनका उपयोग करना चाहिए। किसान कंपनियां बनाकर सामूहिक विपणन करें। बाजार मूल्य को नियंत्रण करके अपनी आमदनी बढ़ाएं। उन्होंने गांवों को सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ने की भी आवश्यकता पर बल दिया। इस मौके पर विशिष्ट अतिथि एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक दलहन एवं तिलहन डॉ. बीबी सिंह ने कहा कि राई सरसों अनुसंधान कार्यक्रम सही दिशा में प्रगति कर रहा है। उन्होंने कहा कि परिषद का सहयोग सभी किसानों को मिलेगा। अध्यक्षीय उद्बोधन में हरियाणा किसान आयोग एवं सरसों अनुसंधान सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ. डीपी सिंह ने कहा कि हर प्रदेश में किसान आयोग का गठन किया जाना चाहिए।

शेष पेज 14 पर..

भरतपुर. किसान को सम्मानित करते अतिथि।

तकनीकी प्रसार पत्रकों का विमोचन किया

कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा दो तकनीकी प्रसार पत्रकों किसान सहभागिता द्वारा सरसों की उन्नत प्रजातियों का चयन एवं बीज उत्पादन अवधारणा एवं अनुभव तथा सरसों आधारित फसल चक्रों हेतु संसाधन संरक्षण तकनीकों का भी विमोचन किया गया। सरसों विज्ञान मेले में उत्कृष्ट कृषि सहभागिता एवं उन्नत तकनीकों को अपनाकर तथा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से सरसों उत्पादन में अग्रणी योगदान के लिए और सरसों पौधा प्रतियोगिता के विजेता 40 किसानों को प्रमाणपत्र एवं प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

प्रदर्शनी लगाई

इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के तकनीकी मूल्यांकन एवं प्रसार अनुभाग की ओर से सरसों की खेती की उन्नत जानकारी देने के लिए प्रदर्शनी भी लगाई गई। प्रदर्शनी में करीब 800 किसानों ने भाग लिया। प्रदर्शनी लगाने वाले सरकारी वर्ग में कृषि विज्ञान केंद्र कुम्हेर, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली तथा कृषि विभाग को क्रमशः सम्मानित किया गया। प्रधान वैज्ञानिक डॉ. वाईपी सिंह ने आभार जताया जबकि संचालन डॉ. एसके झा ने किया।

पेज 11 का शेष.....

खेती को बचाना हैं...

क्योंकि हर प्रदेश की भौगोलिक स्थिति अलग अलग है। इस अवसर पर निदेशालय के निदेशक डॉ. जितेंद्र सिंह चौहान ने कहा कि निदेशालय का मिशन राई सरसों की उत्पादकता बढ़ाना, तेल की गुणवत्ता और किसानों की आजीविका में सुधार के साथ ही विभिन्न हित कारकों को ज्ञान आधारित संसाधन प्रबंधन प्रौद्योगिकी प्रदान करना है। वहीं कृषि विज्ञान केंद्र कुम्हेर के प्रभारी डॉ. अमरसिंह व संयुक्त निदेशक तिलहन कृषि विभाग देशराज सिंह ने भी विचार रखे। यह जानकारी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं जनसंपर्क अधिकारी डॉ. अशोक कुमार शर्मा ने दी।

दैनिक भास्कर 5 फरवरी 2012

किसान खुद उत्पादों का विपणन करें: सिंह

सरसों विज्ञान मेले का आयोजन

भरतपुर, 3 फरवरी। देश की खाद्य तेलों की पूर्ति करने के लिए सरसों की उत्पादकता बढायें, खेती की लागत को कम करें तथा मूल्य भाव को सही रखें तभी देश का किसान खेती पर निर्भर रहकर अपनी जीविका चला सकता है। आज एक गैर किसान की आमदनी यदि 100 रूपये हैं तो उसकी तुलना में एक किसान की आमदनी 20 रूपये है। आमदनी की इस विषमता को खत्म करना होगा तभी हमारे देश की खेती बचेगी और किसान सम्पन्न होगा। इसके लिये किसान अपनी कम्पनियां बनाकर स्वंय कृषि उत्पादों का विपणन करें। यह बात आज सरसों अनुसंधान निदेशालय के 18वें सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष डॉ. आर.बी. सिंह ने किसानों को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि किसानों को अनुसंधानों को देखना चाहिए फिर उन्नत तकनीकों को अपनाकर विश्वास जाग्रत करना चाहिए। सरसों यहाँ के किसानों की मुख्य फसल है और उनकी आजीविका का आधार है। इसलिए सरसों तेल का मूल्य संवर्धन किया जाना चाहिए। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. बी.बी.सिंह ने कहा कि राई-सरसों अनुसंधान कार्यक्रम सही दिशा में प्रग्रति कर रहा है। विपरित परिस्थितियों में भी हमारा सरसों का उत्पादन स्थिर है। हालांकि देश की जरूरतों की देखते हुए सरसों की उत्पादकता अगले 10 वर्षो में 20 क्विंटल प्रति हैक्टेयर करनी होगी। उन्होनें कम अवधि एवं अधिक तापमान सहनशील किस्मों के विकास की जरूरत पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद किसानों के हितों के लिए हमेशा तैयार है। परिषद का सहयोग सभी किसानों को मिलेगा। इस अवसर पर हरियाणा किसान आयोग एवं सरसों अनुसंधान सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ. डी.पी. सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन कहा कि हर प्रदेश में किसान आयोग का गठन किया जाना चाहिए क्योंकि हर प्रदेश की भौगोलिक स्थिति अलग-अलग है।

उन्होने कहा कि किसानों को उनकी फसल का लाभकारी मूल्य मिलना चाहिए। उन्होंने सरसों अनुसंधान निदेशालय में हो रहे अनुसंधानों को सराहा एवं किसानों से उनका अवलोकन करने की अपील की। इस अवसर पर सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डा. जितेन्द्र सिंह चौहान ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर की स्थापना का मिशन राई-सरसों की उत्पादकता बढाना, तेल की गुणवत्ता और किसानों की आजीविका में सुधार करना साथ ही, विभिन्न हितकारकों को ज्ञान आधारित संसाधन प्रबंधन प्रौद्योगिकी प्रदान करना है। हमारा विजन किसानों को सशक्त करना जिससे वे पर्यावरण के अनुकूल एवं लागत प्रभावी राई-सरसों की खेती कर गुणवत्तायुक्त तेल का उत्पादन कर सकें। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र कुम्हेर के प्रभारी डा. अमर सिंह एवं संयुक्त निदेषक (तिलहन), कृषि विभाग देशराज सिंह ने भी किसानों को संबोधित किया तथा उनसे उन्नत तकनीकों को अपनाने की अपील की।

कार्यक्रम के दौरान अतिथियों द्वारा दो तकनीकी प्रसार पत्रकों '' किसान सहभागिता द्वारा सरसों की उन्नत प्रजातियों का चयन एवं बीज उत्पादनः अवधारणा एवं अनुभव'' तथा सरसों आधारित फसल चक्रों हेतु संसाधन संरक्षण तकनीके'' का भी विमोचन किया गया।

सरसों विज्ञान मेले में उत्कृष्ट कृषि सहभागिता एवं उन्नत तकनीकों को अपनाकर तथा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के माध्यम से सरसों उत्पादन में अग्रणी योगदान के लिए और सरसों पौधा प्रतियोगिता के विजेता 40 किसानों को प्रमाण पत्र प्रदान एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान करके सम्मानित किया गया। मेले में कृषि कार्यकर्ताओं सहित 800 किसानों ने भाग लिया। प्रधान वैज्ञानिक डा. वाई.पी.सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. एस.के.झा ने किया। इस अवसर पर प्रदर्शनी लगाने वाले सरकारी वर्ग में कृषि विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली तथा कृषि विभाग को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मनित किया गया। इसके साथ ही गैर सरकारी वर्ग में पी.एच.आई. सीडस प्रा. लि. जयपुर,, एग्रोटिक लि., श्री राम फर्टिलाइजर्स एण्ड केमिकल्स को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

भरतपुर के सरसों अनुसंधान निदेशालय में आयोजित हुये 18वें सरसों विज्ञान मेले के दौरान निदेशालय द्वारा प्रकाशित प्रसार पत्रकों का विमोचन करते एवं सरसों उत्पादन में अग्रणीय योगदान देने वाले एक कृषक को सम्मानित करते अतिथि। फोटोः नवज्योति

दैनिक नवज्योति 5 फरवरी 2012

कल्पतरु एक्सप्रेस

Text View Image View Comments Email Print SHARE

खुद के अस्तित्व को बचाने के लिए निकालना होगा रास्ता: डॉ. आरबी सिंह

किसान खुद करें अपने उत्पाद का वितरण

मथुरा। खेती को बचाने के लिए किसान को बचाना होगा। जब किसान ही नहीं बचेगा तो देश में खेती कैसे होगी। यह तभी होगा जब किसान खुद के उत्पादों का विपणन शुरू करेंगे।

उक्त विचार सरसों अनुसंधान निदेशालय भरतपुर के 18वें सरसों विज्ञान मेले के अवसर पर मुख्य अतिथि राष्ट्रीय कृषि विज्ञान आकादमी के अध्यक्ष डॉ. आरबी सिंह ने व्यक्त किए। उन्होंने अपील की कि देश में खाद्य तेलों की पूर्ति करने के लिए सरसों की उत्पादकता बढ़ानी होगी। आज एक गैर किसान की आमदनी यदि 100 रुपए है तो उसकी तुलना में एक किसान की आमदनी 20 रुपये है। आमदनी की इस खाई को पाटना होगा तभी हमारे देश की खेती बचेगी और किसान समृद्ध होगा। उन्होंने खेती की पद्धति में बदलाव के साथ नवयुवकों से गांव नहीं छोड़ने की अपील की। उन्होंने कहा कि नवयुवकों के लिए देश में बहुत योजनाएं हैं, उनका उपयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि गांवों में कृषि प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना की जानी चाहिए। किसानों को गांव में व्यापार केन्द्र बनाने होंगे। लघु किसानों की सामूहिक खेती करनी चाहिए। किसान कम्पनियां बनाकर सामूहिक विपणन करें। बाजार मूल्य को नियंत्रण करके अपनी आमदनी बढ़ाएं। उन्होंने गांवों को सूचना प्रौद्योगिकी से जोड़ने की भी आवश्यकता पर जोर दिया।

इस अवसर पर विषिष्ट अतिथि एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के सहायक महानिदेशक (दलहन एवं तिलहन) डॉ. बीबी सिंह ने कहा कि राई-सरसों अनुसंधान कार्यक्रम सही दिशा में प्रगति कर रहा है। विपरीत परिस्थितियों में भी हमारा सरसों का उत्पादन स्थिर है। हालांकि देश की जरूरतों की देखते हुए सरसों की उत्पादकता अगले 10 वर्षों में 20 कुतंल प्रति हेक्टेयर करनी होगी। हरियाणा किसान आयोग एवं सरसों अनुसंधान सलाहकार समिति के अध्यक्ष डॉ. डीपी सिंह ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हर प्रदेश में किसान आयोग का गठन किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि किसानों को उनकी फसल का लाभकारी मूल्य मिलना चाहिए। उन्होंने सरसों अनुसंधान निदेशालय में हो रहे अनुसंधानों को सराहा एवं किसानों से उनका अवलोकन करने की अपील की। सरसों अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डा.जितेन्द्र सिंह चौहान ने कहा कि संस्थान का मिशन राई-सरसों की उत्पादकता बढाना, तेल की गुणवत्ता और किसानों की आजीविका में सुधार करना प्रमुख है। हमारा विजन किसानों को सशक्त करना, जिससे वे पर्यावरण के अनुकूल एवं लागत प्रभावी राई-सरसों की खेती कर गुणवत्तायुक्त तेल का उत्पादन कर सकें। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र कुम्हेर के प्रभारी डा. अमर सिंह एवं संयुक्त निदेशक (तिलहन), कृषि देशराज सिंह ने भी किसानों को संबोधित किया तथा उनसे उन्नत तकनीकों को अपनाने की अपील की।

इस अवसर पर अतिथियों द्वारा दो तकनीकी प्रसार पत्रकों 'किसान सहभागिता द्वारा सरसों की उन्नत प्रजातियों का चयन एवं बीज उत्पादनः अवधारणा एवं अनुभव' तथा सरसों आधारित फसल चक्रों हेतु संसाधन संरक्षण तकनीके'का भी विमोचन किया गया। सरसों विज्ञान मेले में सरसों पौधा प्रतियोगिता के विजेता 40 किसानों को प्रमाण पत्र एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान करके सम्मानित किया गया। प्रधान वैज्ञानिक डा. वाईपी सिंह एवं अशोक शर्मा ने सभी का आभार व्यक्त किया । सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा.एसके झा ने किया। इस अवसर पर प्रदर्शनी लगाने वाले सरकारी वर्ग में कृषि विज्ञान केन्द्र कुम्हेर, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली तथा कृषि विभाग को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके साथ ही गैर सरकारी वर्ग में पीएचआई सीड्स जयपुर, विभा एग्रोटेक , श्री राम फर्टिलाइजर्स को क्रमशः पुरस्कृत किया गया।

कल्पतरु एक्सप्रेस

सरसों अनुसंधान निदेशालय के सरसों विज्ञान मेले में तकनीकी पत्रकों का विमोचन करते अतिथिगण।